गोदस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ उच्चागोदं चेव णीचागोदं चेव (* षट्खं. जी. चू. १, ४५.) एवडियाओ पयडीओ।।१३५।।

उच्चैर्गोत्रस्य क्व व्यापारः? न तावद् राज्यादिलक्षणायां सम्पदि, तस्याः तद्वेद्यतः समुत्पत्तेः नापि पंचमहाव्रतग्रहणयोग्यता उच्चैर्गोत्रेण क्रियते, देवेष्वभव्येषु च तद्ग्रहणं प्रत्ययोग्येषु उच्चैर्गोत्रस्य उदयाभावप्रसंगात्। न सम्यग्ज्ञानोत्पत्तौ व्यापारः, ज्ञानावरण(* ता प्रतौ 'ज्ञानवरण' इति पाठः।)क्षयोपशमसहायसम्यग्दर्शनस्तदुत्पत्तेः। तिर्यग्नरकेष्वपि उच्चैर्गोत्रस्योदयः स्यात्, तत्र सम्यग्ज्ञानस्य सत्त्वात्। नादेयत्वे यशसि सौभाग्यं वा व्यापारः, तेषां नामतः समुत्पत्तेः। नेक्ष्वाकुकुलाद्युत्पत्तौ, काल्पनिकानां तेषां परमार्थतोऽसत्त्वात् विड्-ब्राह्मणसाधुष्वपि उच्चैर्गोत्रस्योदयदर्शनात्। न सम्पन्नेभ्यो जीवोत्पत्तौ तद्व्यापारः, म्लेच्छराजसमुत्पन्नपृथुकस्यापि उच्चैर्गोत्रोदयप्रसंगात् नाणुव्रतिभ्यः समुत्पत्तौ तद्व्यापारः, देवेष्वौपपादिकेषु उच्चैर्गोत्रोदयस्यासत्त्वप्रसंगात् नाभेयस्य (*अ आ का प्रतिषु 'नाभेयश्च', ता प्रतौ 'नाभेयश्च (स्य)' इति पाठः।) नीचैर्गोत्रतापत्तेश्च। ततो निष्फलमुच्चैर्गोत्रम्। तत एव न तस्य कर्मत्वमपि। तत एव न तस्य कर्मत्वमपि। तदभावे न नीचैर्गोत्रमपि, द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात्। ततो गोत्रकर्माभाव

गोत्रकर्मकी दो प्रकृतियाँ हैं -- उच्चगोत्र और नीचगोत्र। उसकी इतनी मात्र प्रकृतियाँ हैं।।१३५।।

शंका -- उच्चगोत्रका व्यापार कहाँ होता है? राज्यादिरूप सम्पदाकी प्राप्तिमें तो उसका व्यापार होता नहीं है, क्योंकि, उसकी उत्पत्ति सादावेदनीय कर्मके निमित्तसे होती है। पाँच महाव्रतोंके ग्रहण करनेकी योग्यता भी उच्चगोत्रके द्वारा नहीं की जाती है, क्योंकि, ऐसा माननेपर जो सब देव और अभव्य जीव पाँच महाव्रतोंको नहीं धारण कर सकते हैं, उनमें उच्च गोत्रके उदयका अभाव होता है। सम्यग्ज्ञानकी उत्पत्तिमें उसका व्यापार होता है, यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसकी उत्पत्ति ज्ञानावरणके क्षयोपशमसे सहकृत सम्यग्दर्शनसे होती है। तथा ऐसा माननेपर तिर्यंचों और नारकियोंके भी उच्चगोत्रका उदय मानना पड़ेगा, क्योंकि, उनके सम्यग्ज्ञान होता है। आदेयता, यश और सौभाग्यकी प्राप्तिमें इसका व्यापार होता है; यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उनकी उत्पत्ति नाम कर्मके निमित्तसे होती है। इक्ष्वाकु कुल

आदिकी उत्पत्तिमें भी इसका व्यापार नहीं होता, क्योंकि, वे काल्पनिक हैं, अतः परमार्थसे उनका अस्तित्व ही नहीं है। इसके अतिरिक्त वैश्य और ब्राह्मण साधुओंमें उच्चगोत्रका उदय देखा जाता है। सम्पन्न जनोंसे जीवोंकी उत्पत्तिमें इसका व्यापार होता है, यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, इस तरह तो म्लेच्छराजसे उत्पन्न हुए बालकको भी उच्च गोत्रका उदय प्राप्त होता है। अणुव्रतियोंसे जीवोंकी उत्पत्तिमें उच्चगोत्रका व्यापार होता है, यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर औपपादिक देवोंमें उच्चगोत्रके उदयका अभाव प्राप्त होता है, तथा नाभिपुत्र नीचगोत्री ठहरते हैं। इसलिए उच्चगोत्र निष्फल है, और इसीलिए उसमें कर्मपना भी घटित नहीं होता। उसका अभाव होनेपर नीचगोत्र भी नहीं रहता, क्योंकि, वे दोनों एक-दूसरेके अविनाभावी हैं। इसलिए गोत्रकर्म है ही नहीं ?

इति। न जिनवचनस्यासत्यत्वविरोधात्। तद्विरोधोऽपि तत्र तत्कारणाभावतोऽवगम्यते। न च केवलज्ञानविषयीकृतेष्वर्थेषु सकलेष्वपि रजोजुषां ज्ञानानि प्रवर्तन्ते येनानुपलम्भाज्जिनवचनस्याप्रमाणत्वमुच्येत। न च निष्फलं गोत्रम्, दीक्षायोग्यसाध्वाचाराणां साध्वाचारैः कृतसम्बन्धानां (*आ का ता प्रतिषु 'कृतसबंधनानां' इति पाठः।) आर्यप्रत्ययाभिधान-व्यवहारनिबन्धनानां पुरुषाणां सन्तानः उच्चैर्गोत्रं तत्रोत्पत्तिहेतुकर्माप्युच्चैर्गोत्रम् (* का प्रतौ 'हेतुः कमप्युच्चैः गोत्रं', ता प्रतौ 'हेतुकमप्युच्चैर्गोत्रं' इति पाठः।)। न चात्र पूर्वोक्त्दोषाः सम्भवन्ति, विरोधात्। तद्विपरीतं नीचैर्गोत्रम्। एवं गोत्रस्य द्वे प्रकृती भवतः।

अंतराइयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ? ।।१३६।।

सुगमं।

अंतराइयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ -- दाणंतराइयं लाहंतराइयं भोगंतराइयं परिभोगंतराइयं विरियंतराइयं चेदि (* षट्खं. जी. चू. १, ४६.)। एवडियाओ पयडीओ।।१३७।।

अंतरमेति गच्छतीत्यन्तरायः (* दातृ-देयादीनामन्तरं मध्यमेतीत्यन्तराय। स.सि. ८, ४. दातृ-पात्रयोर्देयादेययोश्च अन्तरं मध्यमेति गच्छतीत्यन्तराय। त. वृ. ८, ४.) रत्नत्रयवद्भ्यः स्ववित्तपरित्यागो दानं रत्नत्रयसाधनदित्सा वा। अभिलषितार्थप्राप्तिर्लाभः। सकृद्भुज्यत (* ता प्रतौ 'भुज्जत' इति पाठः।) इति भोगः गन्ध-ताम्बूल-

----

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जिनवचनके असत्य होनेमें विरोध आता है। वह विरोध भी वहाँ उसके कारणोंसे नहीं होनेसे जाना जाता है। दूसरे, केवलज्ञानके द्वारा विषय किये गये सभी अर्थोंमें छद्मस्थोंके ज्ञान प्रवृत्त भी नहीं हैं। इसीलिए यदि छद्मस्थोंके यदि कोई अर्थ उपलब्ध नहीं होते तो इससे जिनवचनको अप्रमाण नहीं कहा जा सकता। तथा गोत्रकर्म निष्फल है, यह बात नहीं है; क्योंकि, जिनका दीक्षायोग्य साधु आचार है, साधु आचारवालोंके साथ जिन्होंने सम्बन्ध स्थापित किया है तथा जो 'आर्य' इस प्रकारके ज्ञान और वचनव्यवहारके निमित्त हैं; उन पुरुषोंकी परम्पराको उच्चगोत्र कहा जाता है। तथा उनमें उत्पत्तिका कारण भी उच्चगोत्र है। यहाँ पूर्वोक्त दोष सम्भव ही नहीं है, क्योंकि, उनके होनेमें विरोध है।

उससे विपरीत नीच गोत्रकर्म है। इस प्रकार गोत्रकर्मकी दो ही प्रकृतियाँ होती हैं।

अन्तराय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं? ।।१३६।।

यह सूत्र सुगम है।

अन्तराय कर्मकी पाँच प्रकृतियाँ हैं -- दानान्तराय, लाभन्तराय, भोगान्तराय, परिभोगान्तराय और वीर्यान्तराय। उसकी इतनी मात्र प्रकृतियाँ हैं।।१३७।।

जो अन्तर अर्थात् मध्यमें आता है वह अन्तरायकर्म है। रत्नत्रयसे युक्त जीवोंके लिए अपने वित्तका त्याग करने या रत्नत्रयके योग्य साधनोंके प्रदान करनेकी इच्छाका नाम दान है। अभिलषित अर्थकी प्राप्ति होनेका नाम लाभ है। जो एक बार भोगा जाय वह भोग है। यथा -- गन्ध,

----

पुष्पाहारादिः। परित्यज्य पुनर्भुज्यत इति परिभोगः स्त्री-वस्त्राभरणादिः। तत्राभरणानि स्त्रीणां चतुर्दश। तद्यथा -- तिरीट-मुकुट-चूडामणि-हारार्द्धाहार-कटि-कंठसूत्र-मुक्तावलि-कटकांगदांगुलीय-कुंडलग्रैवेय-प्रालंबाः। पुरुषस्य खड्ग-क्षुरिकाभ्यां सह षोडश (* कुंडलमंगद-हारा मउडं केयूरपट्ट-कडयाइं। पालंबसुत्त-णेउर-दोमुहि-मेहलासि छुरियाओ।। गेवज्जं कण्णपुरा पुरिसाणं होंति सोलसाभरणं। चोद्दस इत्थीआणं छूरिया करवालहीणाइं।। कधय-कडिसुत्त-णेउर-तिरीरपालंबसुत्त-मुद्दीओ। हारा कुंडल-मउलद्धहार-चूडामणि व गेविज्जा।। अंगद-छुरिया खग्गा पुरिसाणं होति सोलसाभरणं। चोद्दस इत्थीण तहा छुरियाखग्गेहि

परिहीणा।। ति. प. ४, ३६१-६४.)। वीर्यः शक्तिरित्यर्थः। एतेषां विघ्नकृदन्तरायः। एवमंतराइयस्स पंच पयडीओ। एवं कम्मपयडीए (* आ प्रतौ 'पंचपयडीए' इति पाठः।) समत्ताए दव्वपयडी समत्ता।

जा सा भावपयडी णाम सा दुविहा -- आगमदो भावपयडी चेव णोआगमदो भावपयडी चेव।।१३८।।

आगमो सिद्धंतो सुदणाणं जिणवयणमिदि एयट्ठो। आगमदो अण्णो णोआगमो।

जा सा आगमदो भावपयडी णाम तिस्से इमो णिद्देसो -- ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं। जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जेचा मण्णे एवमादिया (* षट्खं. क. अ. ५४-५५.) उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सा सव्वा आगमदो भावपयडी णाम।।१३९।।

पान, पुष्प और आहार आदि। छोड़कर जो पुनः भोगा जाता है वह उपभोग है। यथा -- स्त्री, वस्त्र और आभरण आदि। इनमें स्त्रियोंके आभरण चौदह होते हैं। यथा -- तिरीट, मुकुट, चूड़ामणि, हार, अर्धहार, कटिसूत्र, कण्ठसूत्र, मुक्तावलि, कटक, अंगद, अँगूठी, कुण्डल, ग्रैवेय और प्रालम्ब। पुरुषके खड्ग ओर छुरीके साथ सोलह होते हैं। वीर्यका अर्थ शक्ति है। इनकी प्राप्तिमें विघ्न करनेवाला अन्तराय कर्म है। इस प्रकार अन्तराय कर्मकी पाँच प्रकृतियाँ हैं।

इस प्रकार कर्मप्रकृतिके समाप्त होनेपर द्रव्यप्रकृति समाप्त हुई।

जो भावप्रकृति है वह दो प्रकारकी है -- आगमभावप्रकृति और नोआगमभावप्रकृति।।१३८।।

आगम, सिद्धान्त, श्रुतज्ञान और जिनवचन ये एकार्थवाची शब्द हैं। आगमसे अन्य नोआगम है।

जो आगमभावप्रकृति है उसका यह निर्देश है -- स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम तथा इनमें जो वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति, धर्मकथा तथा इनको आदि लेकर और जो उपयोग हैं वे सब भाव हैं; ऐसा समझकर जितने भाव हैं वह सब आगमभावप्रकृति है।।१३९।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जहा वेयणाए परूविदो तहा परूवेयव्वो, विसेसाभावादो।

जा सा णोआगमदो भावपयडी णाम सा अणेयविहा। तं जहा -- सुर-असुर-णाग-सुवण्ण-किण्णर-किंपुरिस-गरुड-गंधव्व-जक्ख-रक्खस-मणुअ-महोरग-मिय-पसु-पक्खि-दुवय-चउप्पय-जलचर-थलचर-खगचर-देव-मणुस्स-तिरिक्ख-णेरइयणियणुगा पयडी सा सव्वा णोआगमदो भावपयडी णाम।।१४०।।

तत्र अहिंसाद्यनुष्ठानरतयः सुरा नाम। तद्विपरीताः असुराः। फणोपलक्षिताः नागाः। सुपर्णा नाम शुभपक्षाकारविकरणप्रियाः। गीतरतयः किन्नराः। प्रायेण मैथुनप्रियाः किंपुरुषाः। गरुडाकारविकरणप्रियाः गरुडाः। इन्द्रादीनां गायकाः (* का ता प्रत्योः 'गायनाः' इति पाठः।) गान्धर्वाः। लोभभूयिष्ठाः भांडागारे नियुक्ताः यक्षाः नाम। भीषणरूपविकरणप्रियाः राक्षसा नाम। मानुषीसु मैथुनसेवकाः मनुजा नाम। सर्पाकारेण विकरणप्रियाः महोरगाः नाम। रोमंथवर्जितास्तिर्यंचो मृगा नाम। सरोमंथाः पशवो नाम। पक्षवन्तस्तिर्यंचः पक्षिणः। द्वौ पादौ येषां ते द्विपादाः। चत्वारः पादाः येषां ते चतुष्पादाः। मकर-मत्स्यादयो जलचराः। वृक-व्याघ्रादयः (* ता प्रतौ 'वृषव्याघ्रादयः')

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वार (पुस्तक ९, पृ. २५१-२६४) में की गयी है उसी प्रकारसे यहाँ भी करनी चाहिए, क्योंकि, उससे यहाँ कोई विशेषता नहीं है।

जो नोआगमभावप्रकृति है वह अनेक प्रकारकी है। यथा -- सुर, असुर, नाग, सुपर्ण, किन्नर, किम्पुरुष, गरुड, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, मनुज, महोरग, मृग, पशु, पक्षी, द्विपद, चतुष्पद, जलचर, स्थलचर, खगचर, देव, मनुष्य, तिर्यंच और नारकी; इन जीवोंकी जो अपनी अपनी प्रकृति है वह सब नोआगमभावप्रकृति है।।१४०।।

जिनकी अहिंसा आदिके अनुष्ठानमें रति है वे सुर कहलाते हैं। इनसे विपरीत असुर होते हैं। फणसे उपलक्षित नाग कहलाते हैं। शुभ पक्षोंके आकाररूप विक्रिया करनेमें अनुराग रखनेवाले सुपर्ण कहलाते हैं। गानमें रति रखनेवाले किन्नर कहलाते हैं। प्रायः मैथुनमें रति रखनेवाले किम्पुरुष कहलाते हैं। जिन्हें गरुडके आकाररूप विक्रिया करना प्रिय है वे गरुड कहलाते हैं। इन्द्रादिकोंके गायकोंको गान्धर्व कहते हैं। जिनके लोभकी मात्रा अधिक होती है और जो भाण्डागारमें नियुक्त किये जाते हैं वे यक्ष कहलाते हैं। जिन्हें भीषण रूपकी विक्रिया करना प्रिय है वे राक्षस कहलाते हैं। मनुष्यिनियोंके साथ मैथुनकर्म करनेवाले मनुज कहलाते

हैं। जिन्हें सर्पाकार विक्रिया करना प्रिय है वे महोरग कहलाते हैं। जो तिर्यंच रोंथते नहीं हैं वे मृग कहलाते हैं और जो रौंथते हैं वे पशु कहलाते हैं। पंखोंवाले तिर्यंच पक्षी कहलाते हैं। जिनके दो पैर होते हैं वे द्विपाद कहलाते हैं। जिनके चार पैर होते हैं वे चतुष्पाद कहलाते हैं। मगर-मछली आदि जलचर कहलाते हैं। भेड़िया और वाघ आदि स्थलचर कहलाते हैं। जो आकाशमें गमन करते हैं वे खचर कहलाते हैं। जो अणिमा आदि गुणोंके द्वारा 'दीव्यन्ति' अर्थात् क्रीड़ा करते हैं

स्थलचराः। खे चरन्तीति खचराः। अणिमादिगुणैर्दीव्यन्ति क्रीडन्तीति देवाः। मनसा उत्कटाः मानुषाः। तिरः अञ्चन्ति कौटिल्यमिति तिर्यंचः। न रमन्त इति नारकाः। एतेषां निजानुगा या प्रकृतिः सा सर्वा नोआगमभावप्रकृतिर्नाम। एतत्सूत्रं येन देशामर्शकं तेन ये केचन जीवभावाः कर्मवर्जितअजीवभावाश्च ते सर्वेऽप्यत्र वक्तव्याः। एवं नोआगमदो भावपयडीए सह भावपयडी समत्ता।

एदासिं पयडीणं काए पयडीए पयदं? कम्मपयडीए पयदं।।१४१।।

एवमुवसंहारमस्सिदूण भणिदं। अणुवसंहारे पुण आसइज्जमाणे णोआगमदव्वपयडीए णोआगमभावपयडीए च अहियारो, तत्थ दोण्णं वित्थारपरूवणादो। एवं पगडिणिक्खेवे त्ति समत्तं।

सेसं वेदणाए भंगो।।१४२।।

सेसाणुओगद्दाराणं जहा वेयणाए परूवणा कदा तहा कायव्वा।

एवं पगदि त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

अबोधे बोधे यो जनयति सदा शिष्यः कुमुदे
प्रभूय प्रह्लादी दुरुतपरितापोपशमनः।

तपोवृत्तिर्यस्य स्फुरति जगदानन्दजननी
जिनध्यानासक्तो जयति कुलचन्द्रो मुनिरयम्।।

वे देव कहलाते हैं। जो मनसे उत्कट होते हैं वे मानुष कहलाते हैं। जो 'तिरः' अर्थात् कुटिलताको प्राप्त होते हैं, वे तिर्यंच कहलाते हैं। जो रमते नहीं हैं वे नारक कहलाते हैं। इनकी

अपने अनुकूल जो प्रकृति होती है वह सब नोआगमभावप्रकृति है। यह सूत्र यतः देशामर्शक है अतः जो कोई जीवभाव है और कर्मसे रहित जितने अजीव भाव हैं वे सब यहाँपर कहने चाहिए। इस प्रकार नोआगमभावप्रकृतिके साथ भावप्रकृति समाप्त हुई।

इन प्रकृतियोंमें किस प्रकृतिका प्रकरण है? कर्मप्रकृतिका प्रकरण है।।१४१।।

यह उपसंहारका आलम्बन लेकर कहा है। अनुपसंहारका आश्रय करनेपर तो नोआगमद्रव्यप्रकृति और नोआगमभावप्रकृतिका भी अधिकार है, क्योंकि, वहाँ दोनोंका विस्तारसे कथन किया है। इस प्रकार प्रकृतिनिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

शेष कथन वेदना अनुयोगद्वारके समान है।।१४२।।

शेष अनुयोगद्वारोंकी जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार यहाँ भी करनी चाहिए।

इस प्रकार प्रकृति नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

१

फासाणुओगद्दारसुत्ताणि

१. फासे त्ति	२. तत्थ इमाणि सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति -- फासणिक्खेवे फासणय-विभासणदाए फासणामविहाणे फासखेत्तविहाणे फालकालविहाणे फासभावविहाणे फासपच्चय-विहाणे फाससामित्तविहाणे फास-फासविहाणे फासगइविहाणे फासअणंतविहाणे फास-सण्णियासविहाणे फासपरिमाणविहाणे फास-भागाभागविहाणे फासअप्पाबहुए त्ति।
३. फासणिक्खेवे त्ति	४. तेरसविहे फासविक्खेवे -- णामफासे ठवणफासे दव्वफासे एयखेत्तफासे अणंतखेत्तफासे देसफासे तयफासे सव्वफासे फासफासे कम्मफासे बंधफासे भवियफासे भावफासे चेदि।
५. फासणविभासणदाए।	६. को णओ के फासे इच्छदि?
७. सव्वे एदे फासा बोद्धव्वा होंति णेगमणयस्स। णेच्छदि य बंध-भवियं ववहारो संगहणओ य।।	८. एयक्खेत्तमणंतरबंधं भवियं च णेच्छदुज्जुसुदो। णामं च फासफासं भावप्फासं च सद्दणओ।।
९. जो सो णामफासो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णाम कीरदि फासे त्ति सो सव्वो णामफासो णाम।	१०. जो सो ठवणफासो णाम सो कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया ठवणाए ठविज्जदि फासे त्ति सो सव्वो

	ठवणफासो णाम।
११. जो सो दव्वफासो णाम।	१२. जं दव्वं दव्वेण पुसदि सो सव्वो दव्वफासो णाम।
१३. जो सो एयक्खेत्तफासो णाम।	१४. जं दव्वमेयक्खेत्तेण पुसदि सो सव्वो एयक्खेत्तफासो णाम।
१५. जो सो अणंतरक्खेत्तफासो णाम।	१६. जं दव्वमणंतरक्खेत्तेण पुसदि सो सव्वो अणंतरक्खेत्तफासो णाम।
१७. जो सो देसफासो णाम।	१८. जं दव्वदेसं देसेण पुसदि सो सव्वो देसफासो णाम।
१९. जो सो तयफासो णाम।	२०. जं दव्वं तयं वा णोतयं वा पुसदि सो सव्वो तयफासो णाम।
२१. जो सो सव्वफासो णाम।	२२. जं दव्वं सव्वं सव्वेण पुसदि, जहा परमाणुदव्वमिदि, सो सव्वो सव्वफासो णाम।
२३. जो सो फासफासो णाम।	२४. सो अट्ठविहो -- कक्खडफासो मउवफासो गरुवफासो लहुवफासो णिद्धफासो लुक्खफासो सीदफासो उण्हफासो। सो सव्वो फासफासो णाम।
२५. जो सो कम्मफासो (णाम)।	२६. सो अट्ठविहो -- णाणावरणीय-दंसणा-वरणीय-वेयणीय-मोहणीय-आउअ-णामा-गोद-अंतराइयकम्मफासो। सो सव्वो कम्मफासो णाम।
२७. जो सो बंधफासो णाम।	२८. सो पंचविहो -- ओरालियसरीरबंधफासो एवं वेउव्विय-आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधफासो। सो सव्वो बंधफासो णाम।

२९. जो सो भवियफासो णाम।	३०. जहा विस-कूड-जंत-पंजर-कंडय-वग्गुरादीणि कत्तारो समोद्दियारो य भवियो फुसणदाए णो य पुण ताव तं फुसदि सो सव्वो भवियफासो णाम।
३१. जो सो भावफासो णाम।	३२. उवजुत्तो पाहुडजाणओ सो सव्वो भावफासो णाम।
३३. एदेसिं फासाणं केण फासेण पयदं? कम्मफासेण पयदं।	

२

कम्माणुओगद्दारसुत्ताणि

१. कम्मे त्ति।	२. तत्थ इमाणि सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति --कम्मणिक्खेवे कम्मणय-विभासणदाए कम्मणामविहाणे कम्मदव्वविहाणे कम्मखेत्तविहाणे कम्मकालविहाणे कम्मभाव-विहाणे कम्मसामित्तविहाणे कम्मगइविहाणे कम्म-अणंतरविहाणे कम्मसंणियासविहाणे कम्म-परिमाणविहाणे कम्मभागाभागविहाणे कम्म-अप्पाबहुए त्ति।
३. कम्मणिक्खेवे त्ति।	४. दसविहे कम्मणिक्खेवे -- णामकम्मे ठवणकम्मे दव्वकम्मे पओअकम्मे समुदाणकम्मे आधाकम्मे इरियावहकम्मे तवोकम्मे किरियाकम्मे भावकम्मे चेदि।
५. कम्मणयविभासणदाए को णओ के कम्मे इच्छदि?	६. णेगम-ववहार-संगहा सव्वाणि।
७. उजुसुदो ट्ठवणकम्मं णेच्छदि।	८. सद्दणओ णामकम्मं भावकम्मं च इच्छदि।

९. जं तं णामकम्मं णाम।	१०. तं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि कम्मे त्ति तं सव्वं णामकम्मं णाम।
११. जं तं ठवणकम्मं णाम।	१२. तं कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया ठवणाए ठविज्जदि कम्मे त्ति सव्वं ठवणकम्मं णाम।
१३. जं तं दव्वकम्मं णाम।	१४. जाणि दव्वाणि सब्भावकिरियाणिप्फण्णाणि तं सव्वं दव्वकम्मं णाम।
१५. जं तं पओअकम्मं णाम।	१६. तं तिविहं -- मणपओअकम्मं वचिपओअकम्मं कायपओअकम्मं।
१७. तं संसारावत्थाणं वा जीवाणं सजोगिकेवलीणं वा	१८. तं सव्वं पओअकम्मं णाम।
१९. जं तं समोदाणकम्मं णाम।	२०. तं अट्ठविहस्स वा सत्तविहस्स वा छविहस्स वा कम्मस्स समुदाणदाए गहणं पवत्तदि तं सव्वं समुदाणकम्मं णाम।
२१. जं तमाधाकम्मं णाम।	२२. तं ओद्दावण-विद्दावण-परिदावण-आरंभकदणिप्फण्णं । तं सव्वं आधाकम्मं णाम।
२३. जं तमीरियावहकम्मं णाम।	२४. तं छदुमत्थवीयरायाणं सजोगिकेवलीणं वा तं सव्वमीरियावहकम्मं णाम।
२५. जं तं तवोकम्मं णाम।	२६. तं सब्भंतरबाहिरं बारसविहं। तं सव्वं

	तवोकम्मं णाम।
२७. जं तं किरियाकम्मं णाम।	२८. तमादाहीणं पदाहिणं तिक्खुत्तं तियोणदं चदुसिरं बारसावत्तं तं सव्वं किरियाकम्मं णाम।
२९. जं तं भावकम्मं णाम।	३०. उवजुत्तो पाहुडजाणगो तं सव्वं भावकम्मं णाम।
३१. एदेसिं कम्माणं केण कम्मेण पयदं? समोदाणकम्मेण पयदं।	

३

पयडिअणुओगद्दारसुत्ताणि

१. पयडि त्ति तत्थ इमाणि पयडीए सोलस अणुओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति।	२. पडिणिक्खेवे पयडिणयविभासणदाए पयडिणामविहाणे पयडिदव्वविहाणे पयडिखेत्त-विहाणे पडिकालविहाणे पयडिभावविहाणे पयडि-पच्चयविहाणे पयडिसामित्तविहाणे पयडि-पयडि-विहाणे पयडिगदिविहाणे पयडिअंतरविहाणे पयडिसण्णियासविहाणे पयडिपरिमाणविहाणे पयडिभागविहाणे पयडिअप्पाबहुए त्ति।
३. पयडिणिक्खेवे त्ति।	४. चउव्विहो पयडिणिक्खेवो -- णामपयडी ट्ठवणफपयडी दव्वपयडी भावपयडी चेदि।
५. पयडिविभासणदाए को णओ काओ पयडिओ इच्छदि?	६. णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ।
७. उजुसुदो ट्ठवणपयडिं णेच्छदि।	८. सद्दणओ णामपयडिं भावपयडिं च इच्छदि।
९. जा सा णामपयडी णाम सा जीवस्स वा	१०. जा सा ट्ठवणपयडी णाम सा कट्ठकम्मेसु वा

अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि पयडि त्ति सा सव्वा णामपयडी णाम।	चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे ट्ठवणाए ट्ठविज्जंति सा सव्वा ट्ठवणपयडी णाम।
११. जा सा दव्वपयडी णाम सा दुविहा -- आगमदो दव्वपयडी चेव णोआगमदो दव्वपयडी चेव।	१२. जा सा आगमदो दव्वपयडी णाम तिस्से इमे अत्थाधियारा ट्ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं।
१३. जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुइ-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया।	१४. अणुवजोगा दव्वे त्ति कट्टु जावदिया अणुवजुत्ता दव्वा सा सव्वा आगमदो दव्वपयडी णाम।
१५. जा सा णोआगमदो दव्वपयडी णाम सा दुविहा -- कम्मपयडी चेव णोकम्मपयडी चेव।	१६. जा सा कम्मपयडी णाम सा थप्पा।
१७. जा सा णोकम्मपयडी णाम सा अणेयविहा।	१८. घड-पिढर-सरावारंजणोलुंचणादीणं विविह-भायणविसेसाणं मट्टिया पयडी, घाणतप्पणादीणं च जव-गोधूमा पयडी, सा सव्वा णोकम्मपयडी णाम।
१९. जा सा थप्पा कम्मपयडी णाम सा अट्ठविहा -- णाणावरणीयकम्मपयडी एवं दंसणावरणीय - वेयणीय-मोहणीय-आउअ-णामा-गोद-अंतराइय कम्मपयडी चेदि।	२०. णाणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?
२१. णाणावरणीयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ -- आभिणिबोहियणाणावरणीयं सुदणाणावरणीयं ओहिणाणावरणीयं मणपज्जयणाणावरणीयं	२२. तं आभिणिबोहियणाणावरणीयं णाम कम्मं तं चउव्विहं वा चउवीसदिविधं वा अट्ठावीसदिविधं वा बत्तीसदिविधं वा णादव्वाणि

केवलणाणावरणीयं चेदि।	भवंति।
२३. चउव्विहं ताव ओग्गहावरणीयं ईहावरणीयं अवायावरणीयं धारणावरणीयं चेदि।	२४. जं तं ओग्गहावरणीयं णाम कम्मं तं दुविहं अत्थोग्गहावरणीयं चेव वंजणोग्गहावरणीयं चेव।
२५. जं तं अत्थोग्गहावरणीयं णाम कम्मं तं थप्पं।	२६. जं तं वंजणोग्गहावरणीयं णाम कम्मं तं चउवविहं -- सोदिंदियवंजणोग्गहावरणीयं घाणिं-दियवंजणोग्गहावरणीयं जिब्भिदियवंजणोग्गहा-वरणीयं फासिंदियवंजणोग्गहावरणीयं चेव।
२७. जं तं थप्पमत्थोग्गहावरणीयं णाम तं छव्विहं।	२८. चक्खिंदियअत्थोग्गहावरणीयं घादिंदिय-अत्थोग्गहावरणीयं जिब्भिदियअत्थोग्गहावरणीयं फासिंदियअत्थोग्गहावरणीयं णोइंदियअत्थोग्गहा-वरणीयं। तं सव्वं अत्थोग्गहावरणीयं णाम कम्मं।
२९. जं तं ईहावरणीयं णाम कम्मं तं छव्विहं।	३०. चक्खिदियईहावरणीयं सोदिंदियईहावरणीयं घाणिंदियईहावरणीयं जिब्भिदियईहावरणीयं फासिंदियईहावरणीयं णोइंदियईहावरणीयं। तं सव्वमीहावरणीयं णाम कम्मं।
३१. जं तं अवायावरणीयं णाम कम्मं तं छव्विहं।	३२. चक्खिंदियअवायावरणीयं सोदिंदियअवाया-वरणीयं घाणिंदियअवायावरणीयं जिब्भिदिय-अवायावरणीयं फासिंदियअवायावरणीयं णोइंदियअवायावरणीयं। तं सव्वं अवायावरणीयं

	णाम कम्मं।
३३. जं तं धारणावरणीयं णाम कम्मं तं छव्विहं।	३४. चक्खिदियधारणावरणीयं सोदिंदियधारणा-वरणीयं घाणिंदियधारणावरणीयं जिब्भिंदिय-धारणावरणीयं फासिंदयधारणावरणीयं णोइंदिय-धारणावरणीयं। तं सव्वं धारणावरणीयं णाम कम्मं।
३५. एवमाभिणिबोहियणाणावरणीयस्स कम्मस्स चउव्विहं वा चउवीसदिविधं वा अट्ठावीसदिविधं वा बत्तीसदिविधं वा अडतालीसदिविधं वा चोद्दालसदिविधं वा अट्ठसट्ठिसदविधं वा बाणउदि-सदविधं वा बेसद-अट्ठासीदिविधं वा तिसदछत्तीस-दिविधं वा तिसद-चुलसीदिविधं वा णादव्वाणि भवंति।	३६. तस्सेव आभिणिबोहियणाणावरणीयकम्मस्स अण्णा परूवणा कायव्वा भवदि।
३७. ओग्गहे योदाणे साणे अवलंबणा मेहा।	३८. ईहा ऊहा अपोहा मग्गणा गवेसणा मीमांसा।
३९. अवायो ववसायो बुद्धी विण्णाणी आउंडी पच्चाउंडी।	४०. धरणी धारणा ट्ठवणा कोट्ठा पदिट्ठा।
४१. सण्णा सदी मदी चिंता चेदि।	४२. एवमाभिणिबोहियणाणावरणस्स कम्मस्स अण्णा परूवणा कदा होदि।
४३. सुदणाणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?	४४. सुदणाणावरणीयस्स कम्मस्स संखेज्जाओ पयडीओ।
४५. जावदियाणि अक्खराणि अक्खरसंजोगा वा।	४६. तेसिं गणिदगाधा भवदि -- संजोगावरणट्ठं चउसट्ठिं थावए दुवे रासिं। अण्णोण्णसमब्भासो रूवूणं णिद्दिसे गणिदं।
४७. तस्सेव सुदणाणावरणीयस्स कम्मस्स	४८. पज्जय-अक्खर-पद-संघादय-पडिवत्ति-

वीसदिविधा परूवणा कायव्वा भवदि।	जोगदाराइं। पाहुडपाहुड-वत्थू पुव्वसमासा य बोद्धव्वा।। पज्जयावरणीयं पज्जयसमासावरणीयं अक्खरावरणीयं अक्खरसमासावरणीयं पदावर-णीयं पदसमासावरणीयं संघादावरणीयं संघाद-समासावरणीयं पडिवत्तिआवरणीयं पडिवत्ति-समासावरणीयं अणुयोगद्दारावरणीयं अणुयोग-द्दारसमासावरणीयं पाहुडपाहुडावरणीयं पाहुडपाहुडसमासावरणीयं वत्थुआवरणीयं वत्थु-समासावरणीयं पुव्वावरणीयं पुव्वसमासावरणीयं चेदि।
४९. तस्सेव सुदणाणावरणीयस्स अण्णं परूवणं कस्सामो।	५०. पावयणं पवयणीयं पवयणट्ठो गदीसु मग्गणदा आदा परंपरलद्धी अणुत्तरं पवयणं पवयणी पवयणद्धा पवयणसण्णियासो णयविधी णयतरविधी भंगविधी भंगविधिविसेसो पुच्छाविधी पुच्छाविधिविसेसो तच्चं भूदं भवियं अवितथं अविहदं वेदं णायं सुद्धं सम्माइट्ठी हेदुवादो णयवादो पवरवादो मग्गवादो सुदवादो परवादो लोइयवादो लोगुत्तरीयवादो अग्गं मग्गं जहाणुमग्गं पुव्वं जहाणुपुव्वं पुव्वादिपुव्वं चेदि।
५१. ओहिणाणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?	५२. ओहिणाणावरणीयस्स कम्मस्स असंखे-ज्जाओ पयडीओ।
५३. तं च ओहिणाणं दुविहं -- भवपच्चइयं चेव गुणपच्चइयं चेव।	५४. जं तं भवपच्चइयं तं देव-णेरइयाणं।

५५. जं तं गुणपच्चइयं तं तिरिक्ख-मणुस्साणं।	५६. तं च अणेयविहं देसोही परमोही सव्वोही हायमाणयं वड्ढमाणयं अवट्ठिदं अणवट्ठिदं अणुगामी अणणुगामी सप्पडिवादी अप्पडिवादी एयक्खेत्तमणेयक्खेत्तं।
५७. खेत्तदो ताव अणेयसंठाणसंठिदा।	५८. सिरिवच्छ-कलस-संख-सोत्थिय-णंदावत्ता-दीणि संठाणाणि णादव्वाणि भवंति।
५९. कालदो ताव समयावलिय-खण-लव-मुहुत्त-दिवस-पक्ख-मास-उडु-अयण-संवच्छर-जुग-पुव्व-पव्व-पलिदोवम-सागरोवमादओ विधओ णादव्वा भवंति।	६०. मणपज्जयणाणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?
६१. मणपज्जयणाणावरणीयस्स कम्मस्स दुवे पयीओ उजुमदिमणपज्जयणाणावरणीयं चेव विउलमदिमणपज्जयणाणावरणीयं चेव।	६२. जं तं उजुमदिमणपज्जयणाणावरणीयं णाम कम्मं तं तिवहं -- उजुगं मणोगदं जाणदि, उजुगं वचिगदं जाणदि उजुगं कायगदं जाणदि।
६३. मणेण माणसं पडिविंदइत्ता परेसिं सण्णा सदि मदि चिंता जीविद-मरणं लाहालाहं सुह-दुखं णयरविणासं देसविणासं जणवयविणासं खेडविणासं कव्वडविणासं मडंबविणासं पट्टण-विणासं दोणामुहविणासं अइवुट्ठि अणावुट्ठि सुवुट्ठि दुवुट्ठि सुभिक्खं दुब्भिक्खं खेमाखेम-भय-रोग कालसंपजुत्ते अत्थे वि जाणदि।	६४. किंचि भूओ अप्पणो परेसिं च वत्तमाणाणं जीवाणं जाणदि, णो अवत्तमाणाणं जीवाणं जाणदि?
६५. कालदो जहण्णेण दो-तिण्णि भवग्गहणाणि	६६. उक्कस्सेण सत्तट्ठ भवग्गहणाणि।
६७. जीवाणं गदिमागदिं पदुप्पादेदि।	६८. खेत्तदो ताव जहण्णे गाउवपुधत्तं, उक्कस्सेण जोयणपुधत्तस्स अब्भंतरदो णो बहिद्धा।

६९. तं सव्वमुजुगदिमणपज्जयणाणावरणीयं णाम कम्मं।	७०. जं तं विउलमदिमणपज्जयणाणावरणीयं णाम कम्मं तं छव्विहं -- उज्जुगमणुज्जुगं मणोगदं जाणदि, उज्जुगमणुज्जुगं वचिगदं जाणदि, उज्जुगमणुज्जुगं कायगदं जाणदि।
७१. मणेण माणसं पडिविंदइत्ता।	७२. परेसिं सण्णा सदि मदि चिंता जीविद-मरणं लाहालाहं सुह-दुक्खं णयरविणासं देसविणासं जणवयविणासं खेडविणासं कव्वडविणासं मडंब-विणासं पट्टणविणासं दोणामुहविणासं अदिवुट्ठि अणावुट्ठि सुवुट्ठि दुवुट्ठि सुभिक्खं दुब्भिक्खं खेमाखेमं भय-रोग कालसंपजुत्ते अत्थे जाणदि।
७३. किंचि भूओ -- अप्पणो परेसिं च वत्तमाणाणं जीवाणं जाणदि, अवत्तमाणाणं जीवाणं जाणदि।	७४. कालदो ताव जहण्णेण सत्तट्ठभवग्गहणाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जाणि भवग्गहणाणि।
७५. जीवाणं गदिमागदिं पदुप्पादेदि।	७६. खेत्तदो ताव जहण्णेण जोयणपुधत्तं।
७७. उक्कस्सेण माणुसुत्तरसेलस्स अब्भंतरादो णो बहिद्धा।	७८. तं सव्वं विउलमदिमणपज्जयणाणावरणीयं णाम कम्मं।
७९. केवलणाणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?	८०. केवलणाणावरणीयस्स कम्मस्स एया चेव पयडी।
८१. तं च केवलज्ञानं सगलं संपुण्णं असवत्तं।	८२. सइं भगवं उप्पण्णणाणदरिसी सदेवासुरमाणुसस्स लोगस्स आगदिं गदिं चयणोववादं बंधं मोक्खं इड्ढिं ट्ठिदिं जुदिं अणुभागं तक्कं कलं माणो माणसियं भुत्तं कदं पडिसेविदं आदिकम्मं अरहकम्मं सव्वलोए सव्वजीवे सव्वभावे सम्मं समं जाणदि पस्सदि

	विहरदि त्ति।
८३. केवलणाणं।	८४. दंसणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?
८५. दंसणावरणीयस्स कम्मस्स णव पयडीओ -- णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी णिद्दा य पयला य चक्खुदंसणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं केवलदंसणावरणीयं चेदि।	८६. एवडियाओ पयडीओ ।
८७. वेयणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?	८८. वेयणीयस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ-- सादा-वेदणीयं चेव असादावेदणीयं चेव। एवडियाओ पयडीओ।
८९. मोहणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?	९०. मोहणीयस्स कम्मस्स अट्ठावीस पयडीओ।
९१. तं च मोहणीयं दुविहं दंसणमोहणीयं चेव चरित्तमोहणीयं चेव।	९२. जं तं दंसणमोहणीयं कम्मं तं बंधदो एयविहं।
९३. तस्स संतकम्मं पुण तिविहं सम्मत्तं मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं।	९४. जं तं चरित्तमोहणीयं कम्मं तं दुविहं कसाय-वेदणीयं णोकसायवेदणीयं चेव।
९५. जं तं कसायवेयणीयं कम्मं तं सोलसविहं -- अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोहं अपच्चक्खा-णावरणीयकोह-माण-माया-लोहं पच्चक्खाणावर-णीयकोह-माण-माया-लोहं कोहसंजलणं माण-संजलणं मायासंजलणं लोभसंजलणं चेदि।	९६. जं तं णोकसायवेयणीयकम्मं तं णवविहं -- इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुंसयवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा चेदि।
९७. एवडियाओ पयडीओ।	९८. आउअस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?

९९. आउअस्स कम्मस्स चत्तारि पयडीओ -- णिरयाउअं तिरिक्खाउअं मणुस्साउअं देवाउअं चेदि। एवडियाओ पयडीओ।	१००. णामस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?
१०१. णामस्स कम्मस्स बादालीसं पिंडपयडि-णामाणि -- गदिणामं जादिणामं सरीरणामं सरीरबंधणणामं सरीरसंघादणामं सरीरसंठाण-णामं सरीरअंगोवमगणामं सरीरसंघडणणामं वण्णणामं गंधणामं रसणामं फासणामं आणपुव्वि-णामं अगुरुलहुअणामं उवघादणामं परघादणामं उस्सासणामं आदावणामं उज्जोवणामं विहाय-गदि-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयरणामं चेदि।	१०२. जं तं गदिणामकम्मं तं चउव्विहं -- णिरयगइणामं तिरिक्खगइणामं मणुस्सगदिणामं देवगदिणामं।
१०३. जं तं जादिणामं तं पंचविहं -- एइंदियजादिणामं बेइंदियजादिणामं तेइंदियजादि-णामं चउरिंदियजादिणामं पंचिंदियजादिणामं चेदि।	१०४. जं तं सरीरणामं तं पंचविहं -- ओरालिय-सरीरणामं वेउव्वियसरीरणामं आहारसरीरणामं तेजइयसरीरणामं कम्मइयसरीरणामं चेदि।
१०५. जं तं सरीरबंधणणामं तं पंचविहं -- ओरालियसरीरबंधणणामं वेउव्वियसरीर-बंधणणामं आहारसरीरबंधणणामं तेजइयसरीर-बंधणणामं कम्मइयसरीरबंधणणामं चेदि।	१०६. जं तं सरीरसंघादणणामं तं पंचविहं - ओरालियसरीरसंघादणामं वेउव्वियसरीरसंघाद-णामं आहारसरीरसंघादणामं तेजइयसरीरसंघाद-णामं कम्मइयसरीरसंघादणामं चेदि।
१०७. जं तं सरीरसंठाणणामं तं छव्विहं --	१०८. जं तं सरीरअंगोवंगणामं तं तिविहं --

समचउरसरीरसंठाणणामं णग्गोहपरिमंडल-सरीरसंठाणणामं सादियसरीरसंठाणणामं खुज्ज-सरीरसंठाणणामं वामणसरीरसंठाणणामं हुंड-सरीरसंठाणणामं चेदि।	ओरालियसरीरअंगोवंगणामं वेउव्वियसरीरअंगो-वंगणामं आहारसरीरअंगोवंगणामं चेदि।
१०९. जं तं सरीरसंघडणणामं तं छव्विहं -- वज्जरिसहवइरसरीरसंघडणणामं वज्जनारायण-सरीरसंघडणणामं नारायणसरीरसंघडणणामं अद्धनारायणसरीरसंघडणणामं खीलियसरीर-संघडणणामं असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणणामं चेदि।	११०. जं तं वण्णणामकम्मं तं पंचविहं -- किण्णवण्णणामं णीलवण्णणामं रुहिरवण्णणामं हलिद्दवण्णणामं सुक्किल्लवण्णणामं चेदि।
१११. जं तं गंधणामं तं दुविहं -- सुरहिगंधणामं दुरहिगंधणामं चेदि ।	११२. जं तं रसणामं तं पंचविहं -- तित्तणामं कडुवणामं कसायणामं अंबिलणामं महुरणामं चेदि।
११३. जं तं फासणामं तमट्ठविहं -- कक्खडणामं मउअणामं गरुवणामं लहुअणामं णिद्धणामं ल्हुक्खणामं सीदणामं उसुणणामं चेदि।	११४. जं तं आणुपुव्विणामं तं चउव्विहं -- णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामं तिरिक्खगइपाओ-ग्गाणुपुव्विणामं मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामं देव-गइपाओग्गाणुपुव्विणामं चेदि।
११५. णिरगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए केवडियाओ पयडीओ?	११६. णिरयगइपाओग्गाणिपुव्विणामाए पयडीओ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबाहल्लाणि तिरिय-पदराणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदाओ। एवडियाओ पयडीओ।

११७. तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए केवडियाओ पयडीओ?	११८. तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ लोओ सेडीए असंखेज्ज-दिभागमेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदाओ। एवडियाओ पयडीओ।
११९. मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए केवडियाओ पयडीओ?	१२०. मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ पणदालीसजोयणसदसहस्सबाहल्लाणि तिरिय-पदराणि उड्ढकवाडछेदणणिप्फण्णाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदाओ । एवडियाओ पयडीओ।
१२१. देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए केवडियाओ पयडीओ?	१२२. देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ णवजोयणसदबाहल्लाणि तिरियपदराणइ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदाओ। एवडियाओ पयडीओ।
१२३. एत्थ अप्पाबहुगं।	१२४. सव्वत्थोवाओ णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-णामाए पयडीओ।
१२५. देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।	१२६. मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ संखेज्जगुणाओ।
१२७. तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।	१२८. भूओ अप्पाबहुअं।
१२९. सव्वत्थोवा मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ।	१३०. णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।
१३१. देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।	१३२. तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पयडीओ असंखेज्जगुणाओ।
१३३. अगुरुअलहुअणामं उवघादणामं परघाद-	१३४. गोदस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?

णामं उस्सासणामं आदावणामं उज्जोवणामं विहायगदिणामं तसणामं थावरणामं बादरणामं सुहुमणामं पज्जत्तणामं अपज्जत्तणामं पत्तेयसरीर-णामं साधारणसरीरणामं थिरणामं अथिरणामं सुहणामं असुहणामं सुभगणामं दूभगणामं सुस्सर-णामं दुस्सरणामं आदेज्जणामं अणादेज्जणामं जसकित्तिणामं अजसकित्तिणामं णिमिणणामं तित्थयरणामं।	
१३५. गोदस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ उच्चागोदं चेव णीचागोदं चेव। एवडियाओ पयडीओ।	१३६. अंतराइयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ?
१३७. अंतराइयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ - दाणंतराइयं लाहंतराइयं भोगंतराइयं परिभोगं-तराइयं विरियंतराइयं चेदि। एवडियाओ पयडीओ।	१३८. जा सा भावपयडी णाम सा दुविहा -- आगमदो भावपयडी चेव णोआगमदो भावपयडी चेव।
१३९. जा सा आगमदो भावपयडी णाम तिस्से इमो णिद्देसो -- ठिदं जिदं परिजिदं वयणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं। जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सा सव्वा आगमदो भावपयडी णाम।	१४०. जा सा णोआगमदो भावपयडी णाम सा अणेयविहा। तं जहा -- सुर-असुर-णाग-सुवण्ण-किण्णर-किंपुरिस-गरुड-गंधव्व-जक्ख-रक्खस-मणुअ-महोरग-मिय-पसु-पक्खि-दुवय-चउप्पय-जलचर-थलचर-खगचर-देव-मणुस्स-तिरिक्ख-णेरइयणियणुगा पयडी सा सव्वा णोआगमदो भावपयडी णाम।
१४१. एदासिं पयडीणं काए पयडीए पयदं? कम्मपयडीए पयदं।	१४२. सेसं वेदणाए भंगो।